एक आतम धनी पहचानिये

आज हम जो कुछ अपने वजूद से हैं, उसे ही सत्य मानकर बैठे हैं। जब कि वजूद का अस्तित्व तो श्वासों की गिनती से है। जैसे ही श्वांस समाप्त हुए, यह शरीर तो मुर्दा है, मिट्टी है अतः हम जो कुछ वजूद से हैं, वह कुछ नहीं है तो हम हैं कौन? और जो कुछ हम हैं, उसका मालिक कौन है? हम कहाँ से आये हैं, इस बात की जब तक हमें सुध नहीं हम भ्रम में हैं।

और जब इस बात की सुध आ जाये तो समझो कि हम जाग गये, निश्चय ही हमारी आत्मा यहाँ की नहीं। हमारी आत्मा का धनी पूर्णब्रह्म अक्षरातीत है और इस तन को छोड़ने के बाद हमारा परआतम का तन जो अक्षरातीत का अंग है। अपनी आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाना ही जागनी है। ये मनुष्य तन हमें अपनी आत्मा-परमात्मा और धनी की पहचान करने के लिए ही मिला है तो क्यों न ये मानव तन जो क्षणिक है, उसके रहते अपनी आत्मा के धनी की पहचान कर ले जैसा कि धनी ने फरमाया भी है:-

एक आत्मा धनी पहचानिए, निरमल एही उपाय।
श्री महामत कहें समझ धनी को, ग्रहिए सो प्रेमें पाय।।

आत्मा के धनी की पहचान करने के बाद फिर उसे पाना कैसे है? जब ये पता चल जाय तो जब तक आत्मा को अपने धनी मिल नहीं जाते तब तक न धनी को, न ही आत्म को चैन होगा। क्योंकि माया के इस खेल में वह पारब्रह्म की आत्माएं जब अपने आप को भूल गईं तो उनको जगाने के लिए इस माया-मोह से निकालने के लिए वह पारब्रह्म स्वयं मनुष्य तन धारण करके आये और अपनी कुलजम वाणी, अपने वचनों से अपने घर और अपने स्वरूप की पहचान करा रहे हैं। धनी अपनी आत्माओ को ढूढ़ रहे हैं और आत्माएँ अपने धनी को। तो आओ सब धर्म ग्रन्थों की पहचान कर उन्हें अनन्य प्रेम से प्राप्त कर लेवें। व्यर्थ के आवागमन और दुःखों से मुक्त होकर सदा-सर्वदा अपने धनी के आनन्द में मग्न हो जायें। जो हमारा असल ठिकाना है। जहाँ अखण्ड आनन्द है।

आज तक कोई भी ऋषि-मुनि, तीर्थंकर-अवतार इस बात को नहीं जान पाये कि उनका असल स्वरूप क्या है? क्योंकि दुनियां को इन प्रंश्नों के उत्तर बताने वाले, इस दुनियां को अखण्ड करने वाले वह पारब्रह्म आ चुके हैं, और स्वयं अपनी पहचान करवा रहे हैं। क्योंकि खुद खुदा ही अपनी पहचान करवा सकता है। हम क्यूं न आज तक जिन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दे सका उन बातों को समझें और अपने स्वरूप की पहचान करें और यह समझ लें कि हम जो कुछ हैं अपनी आत्मा से है, शरीर से नहीं, इस माया का ऐसा उल्टा फेरा है कि हम शरीर को ही सब कुछ मानकर उसे ही पालने-पोसने और उसी के सुख में अपना जीवन-व्यर्थ किये जा रहे है? जैसा कि धनी ने

Nijanand App

50

फरमाया भी है:-

आंकडी एक इन भांत की, बाँधी जोर सों ले।
आत्म झूठी देख ही, साँची देखो देह।।

कलश हि० प्र० १६/१६

करे सगाई देह सो, नाहीं आत्मा सो पेहचान।
सनमन्ध पाले इनसो, ए लई सबो मान।।

कलश हि० प्र० १६/७

वैराट का कोहेड़ा इस प्रकार उल्टा है कि किसी को भी अपने आत्म के धनी की पहचान नहीं है जो कुछ सामने है, हमारा वजूद, वजूद के सम्बन्धी, अपने घर- परिवार, रिश्तेदार के सिवाय हमें कुछ सूझता नहीं है ये सम्बंध हमारा क्षणिक है। जिनसे हमारा इतना लगाव है हमारे स्वांस निकलते है तो क्या हाल होता है?

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथो जालें।
सेवा जो करते स्नेह सो, सो सम्बंध ऐसा पाले।।

ये वो रिश्ते नाते और प्यारे लगने वालो का हाल है और जिनसे हमारा असल नाता है। उनकी हमें पहचान नहीं। जाने कब श्वासों की गिनती खतम हो जाए और फिर से जीव आवागमन के चक्कर में उलझे। समय रहते जो हमें कीमती श्वांस मिले है, उनसे अपने धाम की पहचान कर माया के सब फर्ज करते हुए अनन्य प्रेम करके अक्षरातीत श्री राज श्यामा जी की पहचान कर अपनी-अपने घर की पहचान कर अखण्ड़ सुख प्राप्त करें।

"प्रणाम जी"

चरणरज
श्रीमती कंचन आहुजा
जयपुर

प्रार्थना

बहुत प्रयास करने पर भी कुछ लेखों की हिन्दी पढ़ने में कठिनाई होती है या तो लेख हिन्दी में टाईप करवा कर भेजें या अन्य किसी स्पष्ट हिन्दी लिखने वाले से लिखवाकर भेंजे अन्यथा त्रुटियों की शंका बनी रहती है।

धाम दर्शन

Nijanand App